वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 251

वाराणसी तीर्थ परिचय एवं पूजा

(चन्द्रपुरी-सिंहपुरी परिचय एवं पूजा समन्वित)

संकलनकर्त्री

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

20वें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रत की जन्मभूमि राजगृही में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित 'भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव' के संकल्पवर्ष में प्रकाशित

जम्बूद्वीप - हस्तिनापुर

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280236

प्रथम संस्करण	माघ शु. पूर्णिमा	मूल्य
2200 प्रति	फरवरी 2004	12.00

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशन :-

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

-: सम्पादक :-

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

वर्तमान समय में यह देखा जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति भौतिकता की चकाचौंध में इतना तल्लीन हो जाता है कि उसे अपने आवश्यक कर्तव्यों का भी ध्यान नहीं रह जाता है। ऐसे दिशाभ्रमित जीवों को उनके कर्तव्य की याद दिलाने के लिए आचार्यों ने समय-समय पर अनेक छोटे-बड़े ग्रन्थों, पूजा-विधानों की रचना करके महान कार्य किया है।

पूजा-विधान की इस शृंखला में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य किया है इस युग की प्रथम बालब्रह्मचारिणी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने। जिन्होंने एक, दो नहीं अपितु ढाई सौ ग्रन्थों की रचना करके एक कीर्तिमान स्थापित किया है इनमें से लगभग 50 तो पूजा ग्रंथ हैं इनके द्वारा रचित विधानों को करके श्रावकजन भक्ति से झूम उठते हैं।

प्रस्तुत 'वाराणसी तीर्थ परिचय एवं पूजा'' पुस्तक में पूज्य माताजी की प्रेरणासे उनकी शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने वाराणसी तीर्थ के साथ चन्द्रपुरी तीर्थ एवं सिंहपुरी तीर्थ पूजा की रचना करके जन्मभूमि के महत्त्वको प्रकाशमान किया है। ज्ञातव्य है कि पूज्य चन्दनामती माताजी ने 24 तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियों का ''तीर्थंकर जन्मभूमि'' नामक विधान बनाया है जो कि समयसूचकता का परिचायक है।

अब तक आप अच्छी तरह से जान ही चुके हैं कि पूज्य चन्दनामती माताजी भी समय-समय पर अनेक पूजाएं, भजन, चालीसा आदि की रचना करके आधुनिक युग को भक्ति करने की प्रेरणा प्रदान करती रहती हैं। उनके द्वारा रचित हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी भाषा की पूजन, भजन आदि को पढ़कर भक्तगण असीम आनन्द का अनुभव करते हैं इसका मुख्य कारण उनकी सरल एवं सरस भाषा है। इस प्रकार आप सभी अपने हृदय में देव-शास्त्र-गुरु के प्रति भक्ति रखते हुए इस पुस्तक के माध्यम से तीर्थंकरों की एवं उनकी जन्मभूमियों की पूजा-अर्चना करके अपने संसारभ्रमण को समाप्त करने में सफल हों, यही मंगल कामना है।

आभार

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से घोषित *'भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव'* के शुभ अवसर पर प्रकाशित *'वाराणसी तीर्थ परिचय एवं पूजा'* के प्रकाशन में श्री सुनील कुमार जैन, श्रीमती कुमकुम जैन एवं उनकी सुपुत्री कु. भावना जैन, C/o श्री हिमालय फूड कम्पनी (कोल्ड स्टोर), C/20 ओखला इण्डस्ट्रीज, फेस-1, दिल्ली ने ज्ञानदानस्वरूप अपना आर्थिक सहयोग प्रदान किया, एतदर्थ संस्थान उनका आभारी है। ***-सम्पादक***

प्रस्तावना

-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

हिन्दुस्तान में यद्यपि सैकड़ों-हजारों छोटी-बड़ी नगरियाँ हैं परन्तु वे नगरियाँ जनमानस की श्रद्धा का केन्द्र नहीं हैं, श्रावकजन उनकी पूजा नहीं करते हैं और न ही उनके दर्शन से किसी के कर्मों की निर्जरा ही होती है इसके विपरीत वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकरों की जो 16 जन्मभूमियाँ हैं उनका दर्शन-वन्दन प्रत्येक जनमानस केलिए हितकारी है। जैसा कि आपने सुना होगा– **''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी''** अर्थात् जननी– माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी अधिक श्रेष्ठ है। यह तो साधारण मनुष्यों की जन्मभूमि की बात है तो फिर तीर्थंकर जैसे महानपुरुषों की जन्मभूमि की महिमा का क्या वर्णन करना? आचार्य कहते हैं–

जिस प्रकार राजहंस से मानसरोवर शोभा को प्राप्त होता है उसी प्रकार तीर्थंकर महापुरुष के जन्म से वे नगरियाँ पूज्यता– पावनता को प्राप्त हो जाती हैं।

प्रस्तुत पुस्तक 'वाराणसी तीर्थ परिचय एवं पूजा' में भगवान सुपार्श्वनाथ एवं पार्श्वनाथ की जन्मभूमि वाराणसी के साथ ही निकटस्थ तीर्थ भगवान चन्द्रप्रभु की जन्मभूमि चन्द्रपुरी एवं भगवान श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि सिंहपुरी की भी पूजन है।

आज से कोड़ा-कोड़ी वर्ष पूर्व भगवान ऋषभदेव के समय में इन्द्र ने कई देशों-नगरियों के साथ ही काशी देश-वाराणसी की भी रचना की थी परन्तु तब यह वाराणसी नगरी 'तीर्थ' संज्ञा को प्राप्त नहीं थी। जब से जैनधर्म के सातवें तीर्थंकर भगवान सुपार्श्वनाथ ने इस नगरी में जन्म लिया है तब से इस नगरी की मनुष्य तो क्या, देवता भी आकर समय-समय पर पूजा करते हैं पुनः इसी श्रृंखला में आज से 2880 वर्ष पूर्व भगवान पार्श्वनाथ ने भी यहाँ जन्म लेकर इस नगरी की पूज्यता को और भी अधिक वृद्धिंगत कर दिया है।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने 5 दिसम्बर 2003 को भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि राजगृही में **''भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव वर्ष''** मनाने की प्रेरणा प्रदान की है जिसका **''संकल्पदीप प्रज्वलन''** पौष कृ. 11 (19 दिसम्बर 2003) को भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर में पूज्य माताजी के ससंघ सानिध्य में हुआ है तथा इसके साथ ही पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि वाराणसी आदि कई स्थानों पर भक्तों के ''संकल्पदीप'' का अखण्ड प्रज्वलन करके भगवान पार्श्वनाथ महोत्सव मनाने का संकल्प किया है। इसका विधिवत् उद्घाटन अगले वर्ष पौष कृ. 11 (6 जनवरी 2005) में किया जाएगा तथा सम्पूर्ण भारत में इस महोत्सव को धूमधाम से मनाया जाएगा।

इस प्रकार तीर्थंकर जन्मभूमि विकास की प्रेरणास्रोत पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से उनकी सुशिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने तीर्थंकर जन्मभूमियों की पूजन एवं उनके परिचय लिखकर बहुत महानकार्य किया है। आप सभी लोग तीर्थंकर जन्मभूमियों की पूजन करके तथा उनके इतिहास से परिचित होकर अपने पुनर्जन्म को नष्ट करें यही मंगलकामना है।

तीर्थंकर जन्मभूमि विकास की प्रेरणास्रोत-जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी

राष्ट्रगौरव गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का

-:संक्षिप्त-परिचयः-

प्रस्तुति-आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान —टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि —आसोज सुदी १५ (शरदपूर्णिमा) वि. सं. १९९१(सन् १९३४)

गृहस्थ का नाम —कु. मैना

माता-पिता —श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत एवं गृहत्याग— ई. सन् १९५२ में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।

क्षुल्लिका दीक्षा —चैत्र कृ. १, ई. सन् १९५३ को महावीरजी क्षेत्र (राज.) में

आर्यिका दीक्षा —वैशाख कृ. २, ई. सन् १९५६ को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती १०८ आचार्यश्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी के करकमलों से।

कृतित्व — ◆ अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्रव्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं २५० विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका।

- ◆ हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तीनमूर्ति मंदिर, कमल मंदिर, ध्यान मंदिर, ॐमंदिर आदि के निर्माण की प्रेरिका।
- ◆ समवसरण श्रीविहार रथ का सम्पूर्ण भारत में २२ मार्च १९९८ से प्रवर्तन।
- ◆ १९८१, १९८२, १९८५, १९८७, १९९२,१९९३, १९९५, १९९८ में जैनधर्म संबंधी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों की प्रेरिका।
- ◆ १९९५ में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।
- ◆ ४ फरवरी २००० को भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महा महोत्सव की सम्प्रेरिका।
- ◆ "तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली" प्रयाग तीर्थ के निर्माण एवं नूतन तीर्थ पर ४ से ८ फरवरी २००१ तक भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक की प्रेरणास्रोत।
- ◆ ई.सन् २००१ में भगवान महावीर २६००वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव के अवसर पर २६००मंत्रों से समन्वित "विश्वशांति महावीर विधान" का लेखन एवं भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) तीर्थ विकास की प्रेरणा।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान का परिचय

-पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

जिस हस्तिनापुर में इस संस्थान द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कलाप चल रहे हैं, प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की पारणा, कौरव-पाण्डव की राजधानी, दर्शन प्रतिज्ञा में प्रसिद्ध मनोवती का इतिहास आदि पौराणिक कथानकों से जुड़ी वह हस्तिनापुर एक ऐतिहासिक एवं पौराणिक नगरी है। सन् १९७२ में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान दिल्ली से इस संस्था का जन्म हुआ।

सन् १९७५ से हस्तिनापुर में निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया अब तक वहाँ अनेक भव्य रचनाएँ, कमरे, फ्लैट, कोठियां आदि बन चुके हैं, निर्माण के अतिरिक्त संस्थान के द्वारा शिक्षा एवं धर्म प्रचार-प्रसार हेतु शिक्षण शिविर, सेमिनार, अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार, सम्मेलन आदि के आयोजन होते रहते हैं। पूज्य माताजी द्वारा लिखित चारों अनुयोगों एवं धर्मप्रभावना के समाचारों से सहित सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का प्रकाशन २५ वर्षों से निराबाध गति से चल रहा है। सन् १९७४ में स्थापित संस्थान के अन्तर्गत वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला से २५० से भी अधिक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। यहाँ आचार्य श्री वीरसागर विद्यापीठ, जम्बूद्वीप पारमार्थिक औषधालय, जम्बूद्वीप पुस्तकालय, णमोकार महामंत्र बैंक आदि के अन्तर्गत सभी धार्मिक शैक्षणिक कार्यक्रम चलते हैं। सन् १९७५ में प्रारंभ पंचकल्याणकों में अब तक पाँच पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं एवं प्रति ५ वर्षों में होने वाले जम्बूद्वीप महामहोत्सव में से ३ महोत्सव हो चुके हैं। इस संस्थान द्वारा जहाँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् १९८२ में दिल्ली से स्व. प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागांधी द्वारा उद्घाटित ज्ञानज्योति रथ का १०४५ दिनों तक सम्पूर्ण भारत में भ्रमण एवं हस्तिनापुर में उसकी अखण्ड स्थापना हुई वहीं प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ ने सम्पूर्णभारत में भ्रमण कर जैनधर्म की प्राचीनता, अहिंसा-शाकाहार एवं २४ तीर्थंकरों के अहिंसामयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया। वर्तमान में इसी संस्थान के द्वारा भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर की वास्तविकता से परिचित कराने हेतु "महावीर ज्योति" रथ का प्रवर्तन सम्पूर्ण भारत में चल रहा है। जम्बूद्वीप स्थल पर भव्य दीक्षाएं भी हुई हैं। इसी संस्थान द्वारा दिल्ली के लालकिला मैदान से ४ फरवरी सन् २००० को वर्तमान प्रधानमंत्री द्वारा उद्घाटित "भगवान ऋषभदेव अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव" सम्पूर्ण देश एवं विदेशों में मनाया गया। जिसके अन्तर्गत अनेक संगोष्ठियाँ, भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ रचना आदि कार्यक्रम हुए। इसमें संस्थान द्वारा पूज्य माताजी की प्रेरणा से प्रयाग तीर्थ क्षेत्र "तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली" एवं भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में 'नंद्यावर्त महल परिसर' नामक तीर्थ का निर्माणकार्य सम्पन्न हुआ है।

इस प्रकार से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान चतुर्मुखी योजनाओं से समाज को सदैव लाभान्वित करता रहे यही मंगल कामना है।

पुस्तक की रचयित्री

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का

-:संक्षिप्त परिचय:-

प्रस्तुति-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

जन्म	—	१८ मई सन् १९५८, ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या
जन्मस्थान	—	टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
जन्म नाम	—	कु. माधुरी जैन
माता-पिता	—	श्रीमती मोहिनी जैन एवं श्री छोटेलाल जैन
लौकिक शिक्षा	—	हाईस्कूल
धार्मिक अध्ययन	—	शास्त्री, विद्यावाचस्पति आदि
आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत	—	सन् १९७१, अजमेर (राज.) में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी से
दो प्रतिमा के व्रत	—	सन् १९८२, दिल्ली में
सप्तम प्रतिमा	—	मार्च सन् १९८७ हस्तिनापुर में
आर्यिका दीक्षा	—	१३ अगस्त, सन् १९८९ रविवार, श्रावण शुक्ला ग्यारस को हस्तिनापुर में पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के करकमलों से
कार्यकलाप	—	१८ वर्ष तक पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की छत्रछाया में गुरु वैयावृत्ति एवं स्वाध्याय, चिन्तन, मनन, तपश्चरण एवं धर्मप्रवचन, अध्ययन आदि के साथ ही साथ सतत् साहित्य लेखन ।

वर्तमान में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित षट्खंडागम ग्रंथ की संस्कृत टीका का हिन्दी अनुवाद तथा अनेक ग्राम, नगर एवं तीर्थक्षेत्रों पर विहार करते हुए अपने हित-मित वचनामृत से जनकल्याण में निरत और साधना की उच्चतर सीढ़ियों पर सतत आरोहण।

विषयानुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ नं.
1.	वाराणसी तीर्थ परिचय	9
2.	वाराणसी तीर्थ पूजा	12
3.	श्री सुपार्श्वनाथ जिनपूजा	19
4.	श्री पार्श्वनाथ पूजा	26
5.	वाराणसी तीर्थ की आरती	33
6.	श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की आरती	34
7.	श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती	35
8.	चन्द्रपुरी तीर्थ परिचय	36
9.	श्री चन्द्रपुरी तीर्थ पूजा	37
10.	श्री चन्द्रप्रभ जिनपूजा	43
11.	चन्द्रपुरी तीर्थ की आरती	48
12.	श्री चन्द्रप्रभ भगवान की आरती	49
13.	सिंहपुरी तीर्थ परिचय	50
14.	श्री सिंहपुरी तीर्थ पूजा	52
15.	श्री श्रेयांसनाथ जिनपूजा	58
16.	सिंहपुरी तीर्थ की आरती	63
17.	श्री श्रेयांसनाथ भगवान की आरती	64

तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ एवं पार्श्वनाथ जन्मभूमि

वाराणसी तीर्थ का परिचय

प्रस्तुति–आर्यिका चन्दनामती

काशी और वाराणसी नाम से प्रख्यात बनारस नगरी कर्मभूमि के प्रारंभ में ही इन्द्र के द्वारा बसाई गई थी। यहाँ सातवें तीर्थंकर भगवान सुपार्श्वनाथ तथा तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के (जन्म तथा उन दोनों के क्रमशः) चार एवं तीन कल्याणक हुए हैं। जब वहाँ के महाराजा सुप्रतिष्ठ अपनी 'पृथ्वीषेणा' नामक महारानी के साथ राज्य कर रहे थे तब सुपार्श्वनाथ के गर्भ में आने के छह माह पूर्व से लेकर जन्म होने तक कुबेर ने लगातार पन्द्रह माह तक रानी ''पृथ्वीषेणा'' के महल में रत्नों की वर्षा की थी। वे भादों सुदी षष्ठी तिथि को माता के गर्भ में आए तथा ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशी के दिन विशाखा नक्षत्र में उनका जन्म हुआ। पुनः जन्मतिथि में उन्होंने दीक्षा धारण की एवं फाल्गुन कृ. षष्ठी में उन्हें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था। सम्मेदशिखर पर्वत से भगवान सुपार्श्वनाथ ने फाल्गुन कृ. सप्तमी को निर्वाण प्राप्त किया था। इनके शरीर की ऊँचाई 9 हाथ थी, वर्ण हरा था।

इसके पश्चात् भगवान पार्श्वनाथ के संबंध में वर्णन है कि–

भगवान पार्श्वनाथ वाराणसी नगरी में पिता अश्वसेन और माता वम्मिला (वामा) से पौष कृष्णा एकादशी के दिन उत्पन्न हुए। उत्तर पुराण में इनकी माता का नाम ब्राह्मी भी आया है। तीर्थंकर पार्श्वकुमार ने विवाह नहीं किया था, तीस वर्ष की अवस्था में एक दिन राजसभा में अयोध्यानरेश जयसेन के दूत द्वारा भगवान ऋषभदेव का चरित्र सुनते-सुनते उन्हें वैराग्य हो गया था तब उन्होंने

अश्ववन में जाकर जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली। उन्होंने पौष कृ. 11 तिथि को दीक्षा ली एवं शंबर नामक ज्योतिषी देव (कमठ नामक पूर्व भव का वैरी) के दारुण उपसर्गों को सहनकर चैत्र कृ. चतुर्थी[1] तिथि को अहिच्छत्र में केवलज्ञान प्राप्त किया तथा श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन सम्मेदशिखर पर्वत से मोक्षधाम को पधारे हैं। उनके बाद सम्मेदशिखर पर्वत से किसी भी तीर्थंकर ने मोक्ष की प्राप्ति नहीं की है अतः वह पर्वत वर्तमान में ''पारसनाथ हिल'' के नाम से जाना जाता है।

वर्तमान में बनारस नगरी हिन्दुओं के तीर्थधाम से अधिक प्रसिद्धि को प्राप्त है किन्तु प्राचीन इतिहास देखने पर ज्ञात होता है कि जिनधर्म की प्रभावना के अनेक कथानक यहाँ से जुड़े हुए हैं। सर्वप्रथम काशीनरेश अकम्पन ने अपनी पुत्री ''सुलोचना'' का स्वयंवर रचकर इस धरती पर स्वयंवर प्रथा प्रारंभ की थी। हस्तिनापुर के राजकुमार तथा सम्राट् भरत के प्रमुख सेनापति जयकुमार के गले में वरमाला डालकर सुलोचना ने कन्याओं को कुल परंपरा का ध्यान रखते हुए स्वाधीनता–पूर्वक अपना पति चुनने का इतिहास बनाकर कन्याओं की महत्ता प्रदर्शित की थी।

एक अन्य पौराणिक उल्लेख के अनुसार भगवान मल्लिनाथ के तीर्थ में नौंवे चक्रवर्ती ''पद्म'' का जन्म बनारस में हुआ था। तब उन्होंने चक्ररत्न के द्वारा छह खंड को जीतकर बनारस को ही अपनी राजधानी बनाया था।

इसके पश्चात् यहाँ इतिहास की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना घटी थी, वह थी समंतभद्र की। कथानक आता है कि समंतभद्र जी को मुनि अवस्था में भस्मक व्याधि हो गई थी जिसकी उपशांति के लिए उन्होंने गुरु आज्ञा से मुनिवेष का परित्याग कर दक्षिण भारत से उत्तर की बनारस नगरी में आकर एक शिवमंदिर में शिवजी की प्रतिमा को साक्षात् नैवेद्य खिलाने की बात कही थी। उस समय वाराणसी के राजा शिवकोटि थे। उन्हें एक बार मंदिर के पुजारियों से ज्ञात हुआ कि समंतभद्र महादेव जी के भोग का सारा नैवेद्य स्वयंखाते हैं। तब राजा को बड़ा क्रोध आया और उन्होंने समन्तभद्र से शिवपिण्डी के समक्ष गलती स्वीकार करके नमस्कार करने को कहा। समन्तभद्र की भस्मक व्याधि तब तक शान्त हो चुकी थी, उन्होंने भावपूर्वक चौबीसों तीर्थंकर की स्तुति रचना करके उसे पढ़ना शुरू कर दिया। जब वे भगवान चन्द्रप्रभु की स्तुति पढ़ रहे थे तभी शिवपिण्डी फट गई और चन्द्रप्रभ की प्रतिमा उसमें से प्रगट हो गई। यह चमत्कार देखकर राजा शिवकोटि भी उनके अनुयायी बन गए। समन्तभद्र ने पुनः मुनिदीक्षा लेकर स्व-पर कल्याण किया।

---

1. उत्तरपुराण में चैत्र कृष्णा चतुर्दशी मानी है।

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि बनारसीदास भी यात्रा के निमित्त काशी में आए थे। उनके लिखे हुए अर्द्धकथानक नामक आत्मचरित ग्रंथ से पता चलता है कि वे व्यापार आदि के सिलसिले में वाराणसी कई बार आते थे।

बनारस के स्थानीय भारत-कला भवन में पुरातत्त्व संबंधी बहुमूल्य सामग्री संग्रहीत है। यहाँ राजघाट तथा अन्य स्थानों पर खुदाई में जो पुरातत्त्व सामग्री उपलब्ध हुई थी, वह इस कला भवन में सुरक्षित है। यह सामग्री विभिन्न युगों से संबंधित है। इसमें पाषाण और धातु की अनेक जैन प्रतिमाएं भी हैं ये कुषाण काल से लेकर मध्यकाल तक की हैं।

बनारस में 'भदैनी जैन घाट' नाम से एक स्थान है जो भगवान सुपार्श्वनाथ का जन्मस्थान माना जाता है। यहाँ आजकल स्याद्वाद महाविद्यालय नामक प्रसिद्ध शिक्षण संस्था है। इस भवन के ऊपर भगवान सुपार्श्वनाथ का मंदिर है। यह गंगा तट पर अवस्थित है, दृश्य अत्यंत सुन्दर है। मंदिर छोटा ही है किन्तु शिखरबद्ध है।

भगवान पार्श्वनाथ का जन्मस्थल वर्तमान के भेलूपुर मोहल्ले को माना जाता है। उनके जन्मस्थान पर बहुत विशाल सुन्दर मंदिर बना हुआ है। उसी कम्पाउन्ड के भीतर धर्मशाला भी बनी हुई है। जिसमें सभी दिगम्बर जैन बंधुओं के ठहरने की समुचित व्यवस्था है। भेलूपुर में एक और दिगम्बर जैन मंदिर भी है उसमें मूलनायक पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा है।

हिन्दुओं की मान्यतानुसार अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, अवन्ति, उज्जयिनी और द्वारका ये सात महापुरियाँ हैं इनमें काशी मुख्य मानी गई है। ''काश्यां हि मरणान्मुक्तिः'' यह हिन्दू शास्त्रों का वाक्य है।

बनारस सहस्रों वर्षों से विद्या का केन्द्र रहा है। यहाँ भारतीय वाङ्मय-दर्शन और साहित्य के अध्ययन-अध्यापन की प्राचीन परम्परा आज तक सुरक्षित है।

दिल्ली से कुण्डलपुर (नालंदा) की ओर संघ के मंगल विहार के मध्य पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का 19 नवंबर 2002 को बनारस में पदार्पण हुआ। वहाँ लगभग 1 सप्ताह प्रवास के मध्य ''बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय'' में प्रथम बार जैन साधुओं के मंगल प्रवचन का कार्यक्रम भी हुआ। जिसमें बी.एच.यू. तथा डा. सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपतियों सहित अनेक वरिष्ठ प्रवक्ताओं ने पूज्य माताजी की संस्कृत भाषाजनित प्रतिभाशक्ति का कोटिशः अभिनंदन किया तथा अपने विश्वविद्यालयों में दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान–जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर द्वारा प्रदत्त साहित्य को ससम्मान विराजमान किया।

तीर्थंकरद्वय की उस पावन जन्मभूमि वाराणसी तीर्थ को शत-शत नमन।

वाराणसी तीर्थ पूजा

–स्थापना (शंभु छंद) –

जिस वाराणसि नगरी का हमने, नाम सुना है ग्रंथों में।
जो पावन और पवित्र सुपारस, पार्श्वनाथ के चरणों से।।
उस जन्मभूमि तीरथ की पूजन, हेतु करूँ आह्वानन मैं।
स्थापन सन्निधिकरण करूँ, वाराणसि तीर्थ का अर्चन मैं।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसुपार्श्वनाथ पार्श्वनाथ जन्मभूमि वाराणसी तीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसुपार्श्वनाथ पार्श्वनाथ जन्मभूमि वाराणसी तीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसुपार्श्वनाथ पार्श्वनाथ जन्मभूमि वाराणसी तीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक (शंभु छंद) –

हे नाथ! विषयसुख की इच्छा में, मैंने निज को भरमाया।
लेकिन दुःखों की वैतरणी में, किंचित् भी सुख नहिं पाया।।
वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधाग्नी में जलकर अब तक, अपना सर्वस्व लुटाया है।
अब चंदन से पूजा करने का, भाव हृदय में आया है।।
वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयनिधि की पहचान बिना, जड़ को आत्मा मैंने माना।
पूजन में अक्षत पुंज चढ़ा, अब चाहूँ अक्षय पद पाना।।
वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं कामभोग की मदिरा से, अब तक मतवाला बना रहा।
उसकी संतृप्ती हेतू मैं, अब पुष्पमाल को चढ़ा रहा।।
वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इस क्षुधा रोग की ज्वाला से, भव भव में जलता आया हूँ।
उस ज्वाला की उपशांति हेतु, नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।।
वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्री सुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहान्धकार में पड़ा-पड़ा, संसार में ही परिभ्रमण किया।
वह मोह दूर करने हेतू, दीपक का अब अवलंब लिया।।
वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का इस आत्मा के संग, बंधन अनादि से चला किया।
उस बन्धन से मुक्ती हेतू, मैं धूप अग्नि में जला दिया।।
वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

इतने फल भव-भव में खाये, उसका फल क्या पाया मैंने।
उत्तम शिवफल की आश में अब, फल थाल चढ़ाया है मैंने।।
वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सांसारिक अभिलाषाओं में, नहिं पद अनर्घ्य पहचान सका।
''चन्दनामती'' अब अर्घ्य लिये, किंचित् उस पद को जान सका।।
वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

– दोहा –

गंगनदी का नीर ले, करूँ तीर्थ पर धार।
आत्मा भी निर्मल बने, पाऊँ शांति अपार।।

शांतये शांतिधारा।

वाराणसि उद्यान के, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, वाराणसि के माँहि।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

–प्रत्येक अर्घ्य (शंभु छंद) –

भादों सुदि षष्ठी को जहाँ गर्भ, कल्याणक हुआ सुपारस का।
इन्द्रों ने तब उत्सव कीना, जिनवर के गर्भकल्याणक का।।
राजा सुप्रतिष्ठ की रानी पृथ्वी-षेणा भी तब पूज्य बनी।
उस गर्भागम से पावन नगरी, वाराणसि भी वंद्य घनी।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथगर्भकल्याणकपवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ज्येष्ठ सुदी बारस तिथि में, जहाँ श्रीसुपार्श्व ने जन्म लिया।
उन जन्मकल्याणक घड़ियों ने, वाराणसि नगरी धन्य किया।।
स्वर्गों में वाद्य स्वयं बाजे, इन्द्रासन भी कम्पा उस क्षण।
उस जन्मभूमि वाराणसि की, अर्चना किया करते सुरगण।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथजन्मकल्याणकपवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वाराणसि के उपवन में ही, जिनवर सुपार्श्व ने दीक्षा ली।
ऋतु परिवर्तन लख हो विरक्त, मोही परिजन को शिक्षा दी।।
वह तिथि भी ज्येष्ठ सुदी बारस, जब दीक्षा स्वयं लिया प्रभु ने।
दीक्षाकल्याणक से पवित्र, नगरी को अर्घ्य दिया मैंने।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वाराणसि के उद्यान सहेतुक, में शिरीष तरु के नीचे।
फाल्गुन वदि छट्ठ तिथी को केवल-ज्ञान प्राप्त किया जिनवर ने।।
घाती कर्मों का कर विनाश, शुभ समवसरण लक्ष्मी पाया।
मैं इसीलिए वाराणसि तीरथ, की पूजन करने आया।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रवाराणसी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

फिर बाद करोड़ों वर्ष जहाँ, प्रभु पार्श्वनाथ इतिहास चला।
वैशाख कृष्ण दुतिया को गर्भ-कल्याणक उत्सव वहाँ मना।।
पितु अश्वसेन माता वामा के, महलों में सुरगण आये।
उस पावन तीर्थ बनारस को, हम अर्घ्य चढ़ाकर हरषाये।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथगर्भकल्याणकपवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष कृष्ण ग्यारस को पारस-नाथ जहाँ पर जन्मे थे।
मेरूपर्वत की पांडुशिला पर, अभिषव किया था इन्द्रों ने।।
उस जन्मकल्याणक से पावन, नगरी को अर्घ्य चढ़ाऊँ मैं।
वाराणसि तीरथ है प्रसिद्ध, उसकी गुणगाथा गाऊँ मैं।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथजन्मकल्याणकपवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ ऋषभदेव गुणगाथा सुन, पारसप्रभु को वैराग्य हुआ।
तिथि पौष वदी ग्यारस को प्रभु ने, राजपाट सब त्याग दिया।।
उन बालब्रह्मचारी प्रभु के, चरणों में शीश झुका मेरा।
उनकी दीक्षाभूमी वाराणसि, को है कोटि नमन मेरा।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जब पार्श्वनाथ भगवान ध्यान में, लीन तपस्या में रत थे।
उपसर्ग किया तब पूर्व जन्म के, बैरी उस कमठासुर ने।।
धरणेंद्र और पद्मावती ने, उपसर्ग प्रभू का दूर किया।।
हुआ केवलज्ञान जहाँ प्रभु को, अहिच्छत्र तीर्थ वह पूज्य हुआ।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रअहिच्छत्रतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

जिनवर सुपार्श्व अरु पार्श्वनाथ के, कल्याणक से पावन जो।
उनके प्राचीन कथानक से, है प्रसिद्ध तीर्थ बनारस वो।।
उस तीरथ से प्रार्थना मेरी, आत्मा भी तीरथ बन जावे।
मैं पूर्ण अर्घ्य अर्पित करता, मुझको अनर्घ्य पद मिल जावे। 9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथगर्भजन्मादिकल्याणक पवित्र-वाराणसि तीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्यमंत्र– ॐ ह्रीं वाराणसीजन्मभूमिपवित्रीकृत श्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्यां नमः।

जयमाला

–शंभु छंद–

शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।
प्रभु श्रीसुपार्श्व अरु पार्श्वनाथ की, जन्मभूमि को सदा नमन।।टेक.।।
तीर्थंकर श्री वृषभेश्वर की, आज्ञा से बसी नगरियाँ थीं।
उनमें से ही प्रसिद्ध वाराणसि, आदी कई नगरियाँ थीं।।
यहाँ प्रथम आदि तीर्थंकर के, चलते रहते थे सदा भजन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।।1।।
जब-जब स्वर्गों से च्युत होकर, तीर्थंकर यहाँ जनमते थे।
तब-तब धनपति आकर रुचि से, बहुमूल्य रत्न बरसाते थे।।
माता की सेवा करके अष्ट, कुमारी होती थीं प्रसन्न।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।।2।।
दो बार हुई पन्द्रह-पन्द्रह, महिने तक यहाँ रतन वर्षा।
सौधर्म इन्द्र इक सहस्र नेत्र से, प्रभु को देख-देख हर्षा।।
मेरूपर्वत की पाण्डुशिला पर, किया प्रभू का जन्म न्हवन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।।3।।

भगवान जहाँ खेले एवं, स्वर्गों का भोजन किया जहाँ।
तीर्थंकर श्रीसुपार्श्व जिन ने, राजा बन राज्य किया था जहाँ।।
युवराज पार्श्व ने दीक्षा ली, स्वयमेव बालब्रह्मचारी बन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वंदन।।4।।
सम्मेदशिखर से मोक्ष गये, पारस सुपार्श्व द्वय तीर्थंकर।
उपसर्ग हुआ अहिछत्र में, केवलज्ञान लहा पारस जिनवर।।
तीर्थंकर प्रभु की पदरज से, धरती बन जाती नन्दनवन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।।5।।
है वर्तमान में वाराणसि का, क्षेत्र भदैनी सुखकारी।
वह प्रभु सुपार्श्व की जन्मभूमि, मानी जाती मंगलकारी।।
भेलूपुर पारसनाथ जिनेश्वर, का कहलाता जन्मस्थल।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वंदन।।6।।
यह अर्घ्यथाल स्वीकार करो, आठों द्रव्यों से युक्त मेरा।
यह शब्दमाल स्वीकार करो, गुणवर्णन से संयुक्त मेरा।।
यह भक्तिमाल स्वीकार करो, भावों से मैं करता अर्चन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वंदन।।7।।
जन्मभूमि वाराणसी, है जग में सुप्रसिद्ध।
नमन ''चन्दनामती'' सदा, पूजन का है लक्ष्य।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमिवाराणसीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छन्द–

जो भव्य प्राणी पार्श्वप्रभु की, जन्मभूमी को नमें।
वाराणसी तीरथ की रज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चंदना'' वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

श्रीसुपार्श्वनाथ जिनपूजा

रचयित्री –गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

–अथ स्थापना –नरेन्द्रछंद –

श्री सुपार्श्व के चरण कमल में, गणधर गुरुशिर नाते।
मुनिगण स्वात्म रसास्वादी भी, मन मंदिर में ध्याते।।
सप्तम तीर्थंकर मरकतमणि, आभा से अतिसुंदर।
आह्वानन कर जजूँ आपको, नमते तुम्हें पुरंदर।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-चाल-नंदीश्वर पूजा –

सीतानदि शीतल नीर, प्रभुपद धार करूँ।
मिट जाये भव भव पीर, आतम शुद्ध करूँ।।
भगवन् ! सुपार्श्व जिनराज, मेरी अर्ज सुनो।
दे दीजे निज साम्राज्य, मैं तुम चरण नमो।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि गंध सुगंध, प्रभु चरणों चर्चूं।
मिल जावे आत्म सुगंध, स्वारथवश अर्चूं।।
भगवन् ! सुपार्श्व जिनराज, मेरी अर्ज सुनो।
दे दीजे निज साम्राज्य, मैं तुम चरण नमो।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कौमुदी शालि के पुंज, नाथ चढ़ाऊँ मैं।
निज आतम सौख्य अखंड, अर्चत पाऊँ मैं।।
भगवन् ! सुपार्श्व जिनराज, मेरी अर्ज सुनो।
दे दीजे निज साम्राज्य, मैं तुम चरण नमो।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा वकुलादि गुलाब, पुष्प चढ़ाऊँ मैं।
प्रभु मिले आत्म गुण लाभ, आप रिझाऊँ मैं।।
भगवन् ! सुपार्श्व जिनराज, मेरी अर्ज सुनो।
दे दीजे निज साम्राज्य, मैं तुम चरण नमो।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू पेड़ा पकवान, नाथ! चढ़ाऊँ मैं।
कर क्षुधावेदनी हान, निज सुख पाऊँ मैं।।
भगवन् ! सुपार्श्व जिनराज, मेरी अर्ज सुनो।
दे दीजे निज साम्राज्य, मैं तुम चरण नमो।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति अखंड, आरति करते ही।
मिल जाये ज्योति अमंद, निजगुण चमके ही।।
भगवन् ! सुपार्श्व जिनराज, मेरी अर्ज सुनो।
दे दीजे निज साम्राज्य, मैं तुम चरण नमो।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वरधूप अग्नि में खेय, सुरभि उड़ाऊँ मैं।
प्रभु पद पंकज को सेय, समसुख पाऊँ मैं।।
भगवन् ! सुपार्श्व जिनराज, मेरी अर्ज सुनो।
दे दीजे निज साम्राज्य, मैं तुम चरण नमो।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला एला बादाम, फल से पूजूँ मैं।
पाऊँ निज में विश्राम, भव से छूटूँ मैं।।
भगवन् ! सुपार्श्व जिनराज, मेरी अर्ज सुनो।
दे दीजे निज साम्राज्य, मैं तुम चरण नमो।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु अर्घ्य रजत के पुष्प, थाल भराय लिया।
रत्नत्रय से मनतुष्ट, आप चढ़ाय दिया।।
भगवन् ! सुपार्श्व जिनराज, मेरी अर्ज सुनो।
दे दीजे निज साम्राज्य, मैं तुम चरण नमो।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

नाथ! पाद पंकेज, जल से त्रयधारा करूँ।
अतिशय शांतीहेत, शांतीधारा विश्व में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
मिले आत्म सुखलाभ, जिनपद पंकज पूजते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ पंचकल्याणक अर्घ्य

–नरेन्द्र छंद –

प्रभु मध्यम ग्रैवेयक तजकर, वाराणसि में आये।
सुप्रतिष्ठ पितु माता पृथ्वी-षेणा गर्भ में आये।।
भादों सुदि छठ तिथी श्रेष्ठ में, इन्द्र महोत्सव कीना।
गर्भकल्याणक पूजा करते, हमने समकित लीना।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाषष्ठ्यां श्रीसुपार्श्वनाथगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ सुदी बारस में जन्मे, सुरपति आसन कंपे।
देवगृहों में सबविध बाजे, स्वयं स्वयं बज उठते।।
जन्म न्हवन उत्सव विधिपूर्वक, किया इन्द्र सुरगण ने।
जन्मकल्याणक पूजा करते, परमानंद हो क्षण में।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां श्रीसुपार्श्वनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋतु परिवर्तन देख विरक्ती, ज्येष्ठ सुदी बारस में।
मनोगती पालकि सुर लाये, प्रभु बैठे उस क्षण में।।
इन्द्र सहेतुक वन में पहुँचे, प्रभु ने केश उखाड़े।
नमः सिद्ध कह दीक्षा धारी, पूजत कर्म पछाड़े।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां श्रीसुपार्श्वनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि छठ सायं प्रभु ने, घाति विनाश किया था।
बाग सहेतुक तरु शिरीष तल, केवलज्ञान हुआ था।।
इन्द्र सातविध सुरसेना सह, आये समवसरण में।
ज्ञान कल्याणक पूजा करते, ज्ञान ज्योति हो क्षण में।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाषष्ठ्यां श्रीसुपार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि सप्तमी प्रभाते, गिरि सम्मेद शिखर से।
मुक्तिनगर में वास किया था, एक हजार मुनी ले।।
काल अनंतानंत वहीं पे, सुस्थिर हो तिष्ठेंगे।
जिनसुपार्श्व की पूजा करते, कर्ममेघ विघटेंगे।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां श्रीसुपार्श्वनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेंद्राय नमः।

जयमाला

–शेरछंद –

देवाधिदेव श्रीजिनेंद्र देव हो तुम्हीं।
श्रीसुपार्श्व तीर्थनाथ सिद्ध हो तुम्हीं।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय मैं धनवान हो गया।।1।।

रस गंध स्पर्श वर्ण से मैं शून्य ही रहा।
इस मोह कर्म से मेरा संबंध ना रहा।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय मैं धनवान हो गया।।2।।

ये द्रव्य कर्म आत्मा से बद्ध नहीं हैं।
ये भावकर्म तो मुझे छूते भी नहीं हैं।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय मैं धनवान हो गया।।3।।

मैं एक हूँ विशुद्ध ज्ञान दर्श स्वरूपी।
चैतन्य चमत्कार ज्योति पुंज अरूपी।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय मैं धनवान हो गया।।4।।

परमार्थनय से मैं तो सदा शुद्ध कहाता।
ये भावना ही एक सर्वसिद्धि प्रदाता।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय मैं धनवान हो गया।।5।।

व्यवहारनय से यद्यपी अशुद्ध हो रहा।
संसार पारावार में ही डूबता रहा।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय मैं धनवान हो गया।।6।।

फिर भी तो मुझे आज मिले आप खिवैया।
निज हाथ का अवलंब दे भवपार करैया।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय मैं धनवान हो गया।।7।।

प्रभु आठ वर्ष में ही स्वयं देश व्रती थे।
नहिं आपका कोई गुरु हो सकता सत्य ये।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय मैं धनवान हो गया।।8।।

स्वयमेव सिद्धसाक्षि से दीक्षा प्रभू लिया।
तप करके घाति घात के कैवल प्रगट किया।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय मैं धनवान हो गया।।9।।

पंचानवे बलदेव आदि गणधरा कहे।
त्रय लाख मुनी समवसरण में सदा रहे।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय मैं धनवान हो गया।।10।।

मीनार्या गणिनी प्रधान आर्यिका कहीं।
त्रय लाख तीस सहस आर्यिकाएं भी रहीं।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय मैं धनवान हो गया।।11।।

थे तीन लाख श्रावक पण लाख श्राविका।
ये जैन धर्म तत्पर अणुव्रत के धारका।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय मैं धनवान हो गया।।12।।

तनु तुंग आठ शतक हाथ हरित वर्ण की।
आयू प्रभू की बीस लाख पूर्व वर्ष थी।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय मैं धनवान हो गया।।13।।

हे नाथ! आप तीन लोक के गुरू कहे।
भक्तों को इच्छा के बिना सब सौख्य दे रहे।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान् हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय मैं धनवान हो गया।।14।।

मैं आप कीर्ति सुनके आप पास में आया।
अब शीघ्र हरो जन्म व्याधि इससे सताया।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान् हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय मैं धनवान हो गया।।15।।

हे दीनबंधु शीघ्र ही निज पास लीजिए।
इस ''ज्ञानमती'' को प्रभू कैवल्य कीजिए।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान् हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय मैं धनवान हो गया।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–सोरठा –

स्वस्तिक चिन्ह सुपार्श्व, चरण कमल में जो नमें।
दुःख दारिद्र विनाश, पावे जिनगुण संपदा।।1।।

इत्याशीर्वादः।

श्री पार्श्वनाथ पूजा

रचयित्री-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

–अथ स्थापना –

(तर्ज-गोमटेश जय गोमटेश मम हृदय विराजो.....)

पार्श्वनाथ जय पार्श्वनाथ, मम हृदय विराजो-2
हम यही भावना भाते हैं, प्रतिक्षण ऐसी रुचि बनी रहे।
हो रसना में प्रभु नाममंत्र, पूजा में प्रीती घनी रहे।।हम0।।

हे पार्श्वनाथ आवो आवो, आह्वान आपका करते हैं।
हम भक्ति आपकी कर करके, सब दुख संकट को हरते हैं।।
प्रभु ऐसी शक्ती दे दीजे, गुण कीर्तन में मति बनी रहे।।हम0।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतम ज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।
सुरगंगा का उज्ज्वल जल ले, प्रभु चरणों त्रयधार करूँ।
पुनर्जन्म का त्रास दूर हो, इसीलिए प्रभु ध्यान धरूँ।।
भव भव तृषा मिटाने वाली, पूजा जिन भगवान की।।
।।जिनकी0।।वंदे जिनवरम्-4।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतम ज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

मलयागिरि का शीतल चंदन, केशर संग घिसाया है।
प्रभु के चरण कमल में चर्चत, भव संताप मिटाया है।।
तन मन को शीतल कर देती, अर्चा जिन भगवान् की।।
।।जिनकी0।।वंदे जिनवरं-4।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान् की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतम ज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

चिन्मय परमानंद आतमा, नहीं मिला इन्द्रिय सुख में।
प्रभु को अक्षत पुंज चढ़ाते, सौख्य अखंडित हो क्षण में।।
इन्द्र सभी मिल करें वंदना, प्रभु के अक्षयज्ञान की।।
।।जिनकी0।।वंदे जिनवरं-4।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान् की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

रतिपति विजयी पार्श्वनाथ को, पुष्प चढ़ाऊँ भक्ती से।
निज आत्मा की सुरभि प्राप्त हो, निजगुण प्रगटे युक्ती से।।
ब्रह्मर्षीसुर स्तुति करते, चिच्चैतन्य महान् की।।
।।जिनकी0।।वंदे जिनवरम्-4।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान् की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

मालपुआ रसगुल्ला बरफी, जिनवर निकट चढ़ाते ही।
नाना उदर व्याधि विघटित हो, समरस तृप्ती प्रगटे ही।।

गणधर मुनिवर भी गुण गाते, महिमा जिन भगवान् की।।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतम ज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान् की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

केवलज्ञान सूर्य हो भगवन् ! मुझ अज्ञान हटा दीजे।
दीपक से मैं करूँ आरती, ज्ञान ज्योति प्रगटित कीजे।।
चक्रवर्ति भी करें वंदना, अतिशय ज्योतिर्मान की।।
।।जिनकी.।।वंदे जिनवरम्-4।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान् की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

सुरभित धूप धूपघट में मैं, खेऊँ सुरभि गगन फैले।
कर्म भस्म हो जाएं शीघ्र ही, जो हैं अशुभ अशुचि मैले।।
सम्यग्दर्शन क्षायिक होवे, मिले राह उत्थान की।।
।।जिनकी.।।वंदे जिनवरम्-4।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान् की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

अनंनास मोसम्मी नींबू, सेव संतरा फल ताजे।
प्रभु के सन्मुख अर्पण करते, मिले मोक्षफल भव भाजें।।

जिनवंदन से निजगुण प्रगटे, मिले युक्ति शिवधाम की।।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतम ज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान् की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

जल गंधादिक अर्घ्य सजाकर, जिनवर चरण चढ़ा करके।
रत्नत्रय अनमोल प्राप्त कर, बसूं मोक्ष में जा करके।।
इसी हेतु त्रिभुवन जनता भी, भक्ति करे भगवान् की।।
।।जिनकी0।।वंदे जिनवरम्-4।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

कनक भृंग में मिष्ट जल, सुरगंगा सम श्वेत।
जिनपद धारा करत ही, भवजल को जल देत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल चंपा सुरभि, पुष्पांजलि विकिरंत।
मिले निजातम संपदा, होवे भव दुःख अंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

–अथ पंचकल्याणक अर्घ्य –

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका गर्भ कल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ0।।टेक0।।

अश्वसेन पितु वामा माता, तुमको पाकर धन्य हुए।
तिथि वैशाख वदी द्वितीया को, गर्भ बसे जगवंद्य हुए।।

प्रभु का गर्भकल्याणक पूजत, मिले निजातम सार है।।
पार्श्वनाथ0।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां श्रीपार्श्वनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका जन्मकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ0।।

पौष कृष्ण ग्यारस तिथि उत्तम, वाराणसि में जन्म हुआ।
श्री सुमेरु की पांडुशिला पर, इन्द्रों ने जिन न्हवन किया।।
जो ऐसे जिनवर को जजते, हो जाते भव पार हैं।।
पार्श्वनाथ0।।2।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीपार्श्वनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका तपकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ0।।

पौषवदी ग्यारस जाति स्मृति, से बारह भावन भाया।
विमलाभा पालकि में प्रभु को, बिठा अश्ववन पहुँचाया।।
स्वयं प्रभू ने दीक्षा ली थी, जजत मिले भव पार है।।
पार्श्वनाथ0।।3।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीपार्श्वनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका ज्ञानकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ0।।

चैत्रवदी सुचतुर्थी प्रातः, देवदारु तरु के नीचे।
कमठ किया उपसर्ग घोर तब, फणपति पद्मावति पहुँचे।।
जित उपसर्ग केवली प्रभु का, समवसरण हितकार है।।
पार्श्वनाथ0।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां श्रीपार्श्वनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका मोक्षकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ0।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी पारस, सम्मेदाचल पर तिष्ठे।
मृत्युजीत शिवकांता पायी, लोकशिखर पर जा तिष्ठे।।
सौ इन्द्रों ने पूजा करके, लिया आत्म सुखसार है।।
पार्श्वनाथ0।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां श्रीपार्श्वनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय नमः।

जयमाला

(शंभु छंद-तर्ज-चंदन सा वदन.....)

जय पार्श्व प्रभो! करुणासिंधो! हम शरण तुम्हारी आये हैं।
जय जय प्रभु के श्री चरणों में, हम शीश झुकाने आये हैं।।टेक.।।
नाना महिपाल तपस्वी बन, पंचाग्नी तप कर रहा जभी।
प्रभु पार्श्वनाथ को देख क्रोधवश, लकड़ी फरसे से काटी।।
तब सर्प युगल उपदेश सुना, मर कर सुर पद को पाये हैं।।जय.।।1।।
यह सर्प सर्पिणी धरणीपति, पद्मावति यक्षी हुए अहो।
नाना मर शंबर ज्योतिष सुर, समकित बिन ऐसी गती अहो।।
नहिं ब्याह किया प्रभु दीक्षा ली, सुर नर पशु भी हर्षाये हैं।।जय.।।2।।

प्रभु अश्वबाग में ध्यान लीन, कमठासुर शंबर आ पहुँचा।
क्रोधित हो सात दिनों तक बहु, उपसर्ग किया पत्थर वर्षा।।
प्रभु स्वात्म ध्यान में अविचल थे, आसन कंपते सुर आये हैं।।जय.।।3।।
धरणेंद्र व पद्मावति ने फण पर, लेकर प्रभु की भक्ती की।
रवि केवलज्ञान उगा तत्क्षण, सुर समवसरण की रचना की।।
अहिच्छत्र नाम से तीर्थ बना, अगणित सुरगण हर्षाए हैं।।जय.।।4।।
यह देख कमठचर शत्रू भी, सम्यक्त्वी बन प्रभु भक्त बने।
मुनिनाथ स्वयंभू आदिक दश, गणधर थे ऋद्धीवंत घने।।
सोलह हजार मुनिराज प्रभू के, चरणों में शिर नाये हैं।।जय.।।5।।
गणिनी सुलोचना प्रमुख आर्यिका, छत्तिस सहस धर्मरत थीं।
श्रावक इक लाख श्राविकायें, त्रय लाख वहाँ जिन भाक्तिक थीं।।
प्रभु सर्प चिन्ह तनु हरित वर्ण, लखकर रवि शशि शर्माये हैं।।जय.।।6।।
नव हाथ तुंग सौ वर्ष आयु, प्रभु उग्र वंश के भास्कर हो।
उपसर्ग जयी संकट मोचन, भक्तों के हित करुणाकर हो।।
प्रभु महा सहिष्णू क्षमासिंधु, हम भक्ती करने आये हैं।।जय.।।7।।
चौंतिस अतिशय के स्वामी हो, वर प्रातिहार्य हैं आठ कहे।
आनन्त्य चतुष्टय गुण छ्यालिस, फिर भी सब गुण आनन्त्य कहे।।
बस केवल 'ज्ञानमती' हेतू, प्रभु तुम गुण गाने आये हैं।।
जय पार्श्व प्रभो! करुणासिंधो! हम शरण तुम्हारी आये हैं।।जय.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा –

जो पूजें नित भक्ति से, पार्श्वनाथ पदपद्म।
शक्ति मिले सर्वंसहा, होवे परमानंद।।1।।

इत्याशीर्वादः। पुष्पांजलिः।।

तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ एवं पार्श्वनाथ की जन्मभूमि

वाराणसी तीर्थ की आरती

तर्ज –आओ बच्चों.....

चलो सभी मिल करें आरती, वाराणसि शुभ धाम की।
श्री सुपार्श्व अरू पार्श्वनाथ के, जन्मकल्याण स्थान की।।
जय जय पार्श्व जिनं, प्रभो सुपार्श्व जिनं।।टेक.।।
काशी नाम से जानी जाती, वाराणसि यह प्यारी है।
इन्द्र ने जिसे सजाया कर दी, रत्नों की उजियारी है।।
वर्णन जिसका अगम-अकथ है, महिमा जन्म स्थान की।।श्री....।।चलो.।।1।।
श्री सुपार्श्व तीर्थंकर प्रभु के, चार यहाँ कल्याण हुए।
पृथ्वीषेणा के संग राजा, सुप्रतिष्ठ भी धन्य हुए।।
श्री सम्मेदशिखर गिरि है उन, प्रभुवर का शिवधाम जी।।श्री..।।चलो.।।2।।
पुनः इसी पावन भूमी पर, पारसप्रभु ने जन्म लिया।
अश्वसेन के राजदुलारे, वामा माँ को धन्य किया।।
यहीं अश्ववन में दीक्षा ले, चले राह शिवधाम की।।श्री..।।चलो.।।3।।
अछिच्छत्र में ज्ञान मिला, सम्मेदशिखर निर्वाण हुआ।।
बाल ब्रह्मचारी पारस प्रभु, का हम सबने ध्यान किया।।
सांवरिया मनहारी प्रभु की, महिमा अपरम्पार जी।।श्री..।।चलो.।।4।।
प्रभु तुम सम पद पाने हेतू, इस तीरथ को सदा नमूँ।
वाराणसि नगरी की माटी, शीश चढ़ा प्रभु पद प्रणमूँ।।
भाव यही ''चन्दनामती'' हर, आत्मा बने महान भी।।श्री...।।चलो.।।5।।
हुई स्वयंवर प्रथा यहाँ से, ही प्रारंभ कहा जाता।
पद्म नामके चक्रवर्ति का, जन्म यहीं माना जाता।।
भरे कई इतिहास हृदय में, अतिशययुक्त महान भी।।श्री..।।चलो.।।6।।
समन्तभद्राचार्य गुरू की, भस्मक व्याधी शांत हुई।
चन्द्रप्रभू की प्रतिमा प्रगटी, जैनधर्म की क्रान्ति हुई।।
विद्या का यह केन्द्र बनारस, जग में ख्यातीमान भी।।श्री..।।चलो.।।7।।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की आरती

-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

तर्ज –चाँद मेरे आजा रे.....

आज हम आरति करते हैं–2
श्री सुपार्श्व जिनराज की सब मिल, आरति करते हैं।।
राजा सुप्रतिष्ठ बनारस-नगरी के अधिपति माने।
उनकी रानी ने सोलह, सपने देखे रात्री में।
आज हम आरति करते हैं–2
माँ पृथ्वीषेणा के सुत की, आरति करते हैं।।1।।
शुभ ज्येष्ठ सुदी बारस में, जिनवर सुपार्श्व जी जेन्म
सब देव-देवियाँ आकर,प्रभु जन्म न्हवन कर हरषे।।
आज हम आरति करते हैं–2
सुर-नर-मुनि से पूजित प्रभु की, आरति करते हैं।।2।।
ऋतु का परिवर्तन देखा, हो गए विरक्त प्रभू जी।
शुभ ज्येष्ठ सुदी बारस में, जा वन में दीक्षा ले ली।।
आज हम आरति करते हैं–2
स्वयंभुवा त्रैलोक्यनाथ की आरति करते हैं।।3।।
दीक्षा के बाद प्रभू ने, फिर केवलज्ञान को पाया।
फाल्गुन कृष्णा षष्ठी को, वह पावन दिवस है आया।।
आज हम आरति करते हैं–2
केवलज्ञान सहित प्रभुवर की, आरति करते हैं।।4।।
सम्मेदशिखर से फाल्गुन वदि सप्तमि मोक्ष पधारे।
ऐसे सुपार्श्व प्रभु मेरे, सब कर्मकलंक निवारें।।
आज हम आरति करते हैं–2
सिद्धि हेतु ''सारिका'' भक्ति से, आरति करते हैं।।5।।

तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

ॐ जय पारस स्वामी, प्रभु जय पारस स्वामी।
वाराणसि में जन्मे, त्रिभुवन में नामी।। ॐ जय0।।

अश्वसेन के नन्दन, वामा के प्यारे। माता वामा.....
तेइसवें तीर्थंकर-2, तुम जग से न्यारे।।ॐ जय0।।1।।

वदि वैशाख दुतीया, गर्भकल्याण हुआ। स्वामी.....
पौष कृष्ण एकादशि-2, जन्मकल्याण हुआ।।ॐ जय0।।2।।

जन्मदिवस ही दीक्षा, धारण की तुमने। स्वामी.....
बालब्रह्मचारी बन-2, तप कीना वन में।। ॐ जय0।।3।।

कमठासुर ने तुम पर, घोर उपसर्ग किया। स्वामी.....
अहिच्छत्र में तुमने-2, पद कैवल्य लिया।। ॐ जय0।।4।।

श्रीसम्मेदशिखर पर, मोक्षधाम पाया। स्वामी.....
मोक्षकल्याण मनाकर-2, हर मन हरषाया।। ॐ जय0।।5।।

परमसहिष्णु प्रभु की, आरति को आए। स्वामी.....
यही ''चन्दनामती'' अरज है-2, तव गुण मिल जाएं।। ॐ जय0।।6।।

तीर्थंकर चन्द्रप्रभ जन्मभूमि

चन्द्रपुरी तीर्थ का परिचय

प्रस्तुति—आर्यिका चन्दनामती

गंगा के सुरम्य तट पर स्थित जैनधर्म के आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभ भगवान की जन्मभूमि चन्द्रपुरी वाराणसी से लगभग 24 किमी. दूर है। यहाँ की वन्दना से असीम आनन्दानुभूति होती है। यहाँ चन्द्रप्रभ तीर्थंकर के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान ये चार कल्याणक हुए थे इसलिए यह अत्यन्त प्राचीन तीर्थस्थान माना जाता है।

यहाँ एक प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर है एवं निकट में ही एक श्वेताम्बर जैन मंदिर है। दिगम्बर जैन मंदिर दूसरी मंजिल पर निर्मित है तथा इसके चारों ओर पुरानी धर्मशाला भी है।

मंदिर में गर्भगृह के द्वार पर इधर-उधर आलों में ''विजय यक्ष'' और अष्टभुजी यक्षिणी ''ज्वालामालिनी'' की मूर्तियाँ विराजमान हैं।

गंगा के तट पर स्थित होने के कारण इस मंदिर का विहंगम दृश्य अत्यन्त मनोहारी है। किंतु इस तीर्थ की वीरानियत देखकर मन अत्यन्त दुखी हो जाता है, इसके जीर्णोद्धार एवं विकास की अत्यन्त आवश्यकता है।

चन्द्रपुरी तीर्थ बनारस और गाजीपुर मार्ग पर स्थित है।इस पावन तीर्थ को शत-शत नमन।

श्री चन्द्रपुरी तीर्थ पूजा

–स्थापना-शंभु छन्द –

अष्टम तीर्थंकर चन्द्रप्रभू की, जन्मभूमि है चन्द्रपुरी।
गर्भागम से केवलज्ञानी, बनने तक पावन हुई मही।।
उस चन्द्रपुरी तीरथ की पूजन, से पहले आह्वानन है।
स्थापन सन्निधिकरण सहित, जन्मस्थल का आराधन है।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक (शंभु छन्द) –

जग में कुछ सुख है कुछ दुख है, मैंने तो अब तक यह जाना।
लेकिन यह भ्रम है गुरु कहते, जग में केवल दुख ही माना।।
निज जन्ममरण के नाश हेतु, पूजन में जल की धार करूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वन्दन बारम्बार करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन अरु चंद्रकिरण मोती, गंगाजल यद्यपि शीतल हैं।
लेकिन जिनवर के पुण्यवचन, इस जग में शाश्वत शीतल हैं।।
पूजन में चन्दन चर्चन कर, संसार ताप को शांत करूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वन्दन बारम्बार करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

छहखंडाधिप चक्री का भी, नहिं पद अक्षय रह पाया है।
बस मात्र अमूर्तिक आत्मा का, क्षय कभी न होने पाया है।।

उस आतम सुख की प्राप्ति हेतु, पूजन में अक्षत थालधरूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वन्दन बारम्बार करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

यूँ तो पञ्चेन्द्रिय विषयों का, तीर्थंकर भी उपभोग करें।
पर उनको नश्वर समझ शीघ्र ही, उन्हें त्याग कर मोक्ष वरें।।
निज कामबाण विध्वंस हेतु, पूजन में पुष्प की माल धरूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वंदन बारम्बार करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हो कल्पवृक्ष का भोजन चाहे, शाश्वत तृप्ति न देता है।
वह तो खाते-खाते भी सबकी, क्षुधा वृद्धि कर देता है।।
शुद्धातम की संतृप्ति हेतु, पूजन में व्यंजन थाल भरूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वंदन बारम्बार करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो रत्नदीप या घृतदीपक, सबका प्रकाश क्षणभंगुर है।
केवल आत्मा का ज्ञानदीप, देता प्रकाश अविनश्वर है।।
मोहान्धकार के नाश हेतु, पूजन में दीपक थाल धरूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वन्दन बारम्बार करूँ।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शारीरिक सुख की प्राप्ति हेतु, जलती है धूप सभी घर में।
लेकिन उससे नहिं कर्मनाश, होते वह तो भव वृद्धि करे।।
उन कर्मों के विध्वंस हेतु, अग्नी में धूप प्रजाल करूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वंदन बारम्बार करूँ।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तन की संपुष्टी हेतु न जाने, कितने फल खाए जाते।
लेकिन मन की संपुष्टि हेतु, वे फल भी कार्य न कर पाते।।
अब मोक्षमहाफल प्राप्ति हेतु, पूजन में फल का थाल भरूँ।
श्री चन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वन्दन बारम्बार करूँ।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमि चन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर प्रभु ने तप करके, जिस अष्टम वसुधा को पाया।
उसको पाने के लिए ''चन्दनामती'', अर्घ्य मैं ले आया।।
आत्मा को पूज्य बनाने हेतू, अष्टद्रव्य का थाल भरूँ।
श्री चन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वन्दन बारम्बार करूँ।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमि चन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय की प्राप्ती हेतू, त्रयधारा जल की मैं डालूँ।
निज आत्मा की शांती हेतू, शांतीधारा मैं कर डालूँ।।
पुर राज्य राष्ट्र की शांति हेतु, झारी से शांतीधार करूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वन्दन बारम्बार करूँ।।10।।

शान्तये शांतिधारा।

जीवन को पुष्पित करने का, शुभ भाव हृदय में आया है।
बस इसीलिए तीरथ पर, पुष्पांजलि करना मन भाया है।।
धरती का अंचल सजा रहे, पुष्पों का रंग अपार करूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वन्दन बारम्बार करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

जहाँ चैत्र वदी पंचमि तिथि को, चन्द्रप्रभ गर्भ पधारे थे।
लक्ष्मणा मात महासेन पिता सह, धन्य सभी जग वाले थे।।
उस गर्भकल्याणक की नगरी, शुभ चन्द्रपुरी अतिप्यारी है।
गंगा तट बसी हुई नगरी को, पूजूँ वह सुखकारी है।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभगर्भकल्याणकपवित्रचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जिन महलों में चन्द्रप्रभ ने, तीर्थंकर बनकर जन्म लिया।
तिथि पौष कृष्ण एकादशि को भी, अपने जन्म से धन्य किया।।
उस नगरी में अद्यावधि भी, प्राचीन एक जिनमंदिर है।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर चन्द्रपुरी को, पाऊँ पद अतिसुन्दर है।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मकल्याणकपवित्रचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पण में मुख लखकर जहाँ श्री, चन्द्रप्रभ को वैराग्य हुआ।
वदि पौष इकादशि को जहाँ जिनवर, को दीक्षा से राग हुआ।।
जिस नगरी का सर्वर्तुक वन भी, प्रभु दीक्षा से था पावन।
उस चन्द्रपुरी को अर्घ्य चढ़ा, मेरा खिल जावे मन उपवन।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभदीक्षाकल्याणकपवित्रचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

उस चन्द्रपुरी के सर्वर्तुक वन, में ही केवलज्ञान हुआ।
फाल्गुन वदि सप्तमि तिथि को जहाँ पर, समवसरण निर्माण हुआ।।
श्रीचन्द्रप्रभ की ज्ञानकल्याणक, भूमी को शत-शत वंदन।
मस्तक पर पावन धूलि चढ़ा, मैं अर्घ्य चढ़ाकर करूँ नमन।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

चन्द्रप्रभ जी के चार कल्याणक, से पवित्र जो नगरी है।
चिरकाल बीत जाने पर वह, वीरान हो गई नगरी है।।
लेकिन उसकी रज लेने को, सब भक्त आज भी आते हैं।
उस तीरथ के पावन चरणों में, हम भी अर्घ्य चढ़ाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभगर्भजन्मदीक्षाज्ञानचतुःकल्याणकपवित्र चन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं चन्द्रपुरी जन्मभूमि पवित्रीकृत श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

तर्ज-मनिहारों का वेष बनाया.....

मैंने पूजन का थाल सजाया,
पूजा करने का भाव है आया।।टेक.।।

गंगा यमुना नहाना ही तीरथ नहीं,
मन को पावन बनाना है तीरथ सही।
सत्य का पंथ अब अपनाया,
पूजा करने का भाव है आया।।1।।

धूनी भस्म रमाना न तप है सही,
मन को निज वश में लाना ही तप है सही।
वही पथ मैंने अब अपनाया,
पूजा करने का भाव है आया।।2।।

मिथ्या भावों का जप-तप सभी व्यर्थ है,
क्रिया सम्यक्त्वयुत तप में ही अर्थ है।
वही सम्यक्त्व अब मैंने पाया,
पूजा करने का भाव है आया।।3।।

भव जलधि से जो तिरवाते वे तीर्थ हैं,
उनमें ही चन्द्रपुरि की अमर कीर्ति है।
चन्द्रप्रभ ने जनम जहाँ पाया,
पूजा करने का भाव है आया।।4।।

गर्भ जन्म व तप ज्ञान चारों हुए,
जहाँ पर कार्य उत्तम हजारों हुए।
उसका गुणगान अब मैंने गाया,
पूजा करने का भाव है आया।।5।।

पूज्यता उसके कण-कण में है आज भी,
जैन संस्कृति का पावन है इतिहास भी।

वही इतिहास मैंने भी गाया,
पूजा करने का भाव है आया।।6।।

स्वर्णथाली में पूजन की सामग्री है,
अर्घ्य के संग मिली उसमें मणियाँ भी हैं।
आठों द्रव्यों को क्रम से सजाया,
पूजा करने का भाव है आया।।7।।

मोक्ष सम्मेदगिरि से प्रभू ने लहा,
चन्द्रप्रभ टोंक अब भी बना है वहाँ।
उसका भी संस्मरण आज आया,
पूजा करने का भाव है आया।।8।।

अर्चना हो सफल तीर्थ बन पाऊँ मैं,
''चन्दनामति'' निजातम में रम जाऊँ मैं।
भाव मैंने ये मन में बनाया,
पूजा करने का भाव है आया।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छन्द –

जो भव्यप्राणी चन्द्रप्रभु की, जन्मभूमि को नमें।
श्रीचन्द्रपुरि तीरथ की रज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चन्दना'' वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजा

रचयित्री-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

–अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद –

अर्धचन्द्र सम सिद्ध शिला पर, श्रीचन्द्रप्रभ राजें।
चन्द्रकिरण सम देह कांति को, देख चन्द्र भी लाजे।।
अतः आपके श्री चरणों में, हुआ समर्पित चंदा।
आह्वानन कर चन्द्रप्रभू का, मेरा मन आनंदा।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-नरेन्द्रछंद –

गंगा सरिता का निर्मल जल, रजत कलश भर लाऊँ।
श्री चन्द्रप्रभ चरण कमल में, धारा तीन कराऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन केशर घिस, गंध सुगंधित लाऊँ।
जिनवर चरण कमल में चर्चूं, निजानंद सुख पाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रकिरणसम उज्ज्वल तंदुल, लेकर पुंज रचाऊँ।
अमल अखंडित सुख से मंडित, निजआतम पद पाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्ली बेला कमल केवड़ा, पुष्प सुगंधित लाऊँ।
जिनवर चरण कमल में अर्पूं, निजगुण यश विकसाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृतपिंड सदृश चरु ताजे, घेवर मोदक लाऊँ।
जिनवर आगे अर्पण करते, सब दुःख व्याधि नशाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक में ज्योति जलाकर, करूँ आरती भगवन् ।
निज घट का अज्ञान दूर हो, ज्ञानज्योति उद्योतन।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर चंदन से मिश्रित, धूप सुगंधित लाऊँ।
अशुभ कर्म के दग्ध हेतु मैं, अग्नी संग जलाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम अंगूर सरस फल, लाके थाल भराऊँ।
जिनवर सन्निध अर्पण करते, परमानंद सुख पाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कुसुमावलि, आदिक अर्घ बनाऊँ।
उसमें रत्न मिलाकर अर्पूं, तीनरत्न निज पाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, भव भव दुःख से छूटूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **पद्मसरोवर नीर से, चन्द्रप्रभ चरणाब्ज।**
त्रयधारा विधि से करूँ, मिले शांति साम्राज्य।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जुही गुलाब सुगंधियुत, वर्ण वर्ण के फूल।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य अनुकूल।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

*–*गीताछंद *–*

जिनचंद्र विजयंते अनुत्तर, से चये आये यहाँ।
महासेन पितु माँ लक्ष्मणा के, गर्भ में तिष्ठे यहाँ।।
शुभ चंद्रपुरि में चैत्रवदि, पंचमि तिथी थी शर्मदा।
इंद्रादि मिल उत्सव किया, मैं पूजहूँ गुणमालिका।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णापंचम्यां चंद्रप्रभजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्र जिनवर पौष कृष्णा, ग्यारसी शुभयोग में।
जन्में उसी क्षण सर्व बाजे, बज उठे सुरलोक में।।
तिहुँलोक में भी हर्ष छाया, तीर्थंकर महिमा महा।
सुरशैल पर जन्माभिषव को, देखते ऋषि भी वहाँ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां चन्द्रप्रभजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदर्श में मुख देखकर, वैराग्य उपजा नाथ को।
वदि पौष एकादशि दिवस, इंद्रादि सुर आये प्रभो।।

पालकी विमला में बिठा, सर्वर्तुवन में ले गये।
स्वयमेव दीक्षा ली किया, बेला जगत वंदित हुए।।3।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां चन्द्रप्रभजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी सप्तमि तिथी, सर्वर्तुवन में आ गये।
तरु नाग नीचे ज्ञान केवल, हुआ सुरगण आ गये।।
धनपति समवसृति को रचा, श्रीचंद्रप्रभ राजें वहाँ।
द्वादशगणों के भव्य जिनध्वनि, सुनें अति प्रमुदित वहाँ।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां चन्द्रप्रभजिनज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चंद्रजिन फाल्गुन सुदी, सप्तमि निरोधा योग को।
सम्मेदगिरि से मुक्ति पायी, जजें सुरपति भक्ति सों।।
हम भक्ति से श्रीचंद्रप्रभ, सम्मेदगिरि को भी जजें।
निज आत्म संपति दीजिए, इस हेतु ही प्रभु को भजें।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लासप्तम्यां चन्द्रप्रभजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।।

जाप्य – ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

–दोहा –

परम हंस परमात्मा, परमानंद स्वरूप।
गाऊँ तुम गुण मालिका, अजर अमर पद रूप।।1।।

–शंभु छंद –

जय जय श्री चन्द्रप्रभो जिनवर, जय जय तीर्थंकर शिव भर्ता।
जय जय अष्टम तीर्थेश्वर तुम, जय जय क्षेमंकर सुख कर्ता।।

काशी में चन्द्रपुरी सुंदर, रत्नों की वृष्टी खूब हुई।
भू धन्य हुई जन धन्य हुए, त्रिभुवन में हर्ष की वृद्धि हुई।।2।।
प्रभु जन्म लिया जब धरती पर, इन्द्रों के आसन कंप हुए।
प्रभु के पुण्योदय का प्रभाव, तत्क्षण सुर के शिर नमित हुए।।
जिस वन में ध्यान धरा प्रभु ने, उस वन की शोभा क्या कहिए।
जहाँ शीतल मंद पवन बहती, षट् ऋतु के कुसुम खिले लहिये।।3।।
सब जात विरोधी गरुड़, सर्प, मृग, सिंह खुशी से झूम रहे।
सुर खेचर नरपति आ आकर, मुकुटों से जिनपद चूम रहे।।
दश लाख वर्ष पूर्वायू थी, छह सौ कर तुंग देह माना।
चिंतित फल दाता चिंतामणि, अरु कल्पतरू भी सुखदाना।।4।।
श्रीदत्त आदि त्रयानवे गणधर, मनपर्यय ज्ञानी माने थे।
मुनि ढाई लाख आत्मज्ञानी, परिग्रह विरहित शिवगामी थे।।
वरुणा गणिनी सह आर्यिकाएं, त्रय लाख सहस अस्सी मानीं।
श्रावक त्रय लाख श्राविकाएं, पण लाख भक्तिरस शुभध्यानी।।5।।
भव वन में घूम रहा अब तक, किंचित् भी सुख नहिं पाया हूँ।
प्रभु तुम सब जग के त्राता हो, अतएव शरण में आया हूँ।।
गणपति सुरपति नरपति नमते, तुम गुणमणि की बहु भक्ति लिए।
मैं भी नत हूँ तव चरणों में, अब मेरी भी रक्षा करिये।।6।।

दोहा – हे चन्द्रप्रभ! आपके, हुए पंच कल्याण।
मैं भी मांगूं आपसे, बस एकहि कल्याण।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेंद्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

दोहा – तीर्थंकर प्रकृति कही, महापुण्य फलराशि।
केवल ''ज्ञानमती'' सहित, मिले सर्वसुखराशि।।1।।

इत्याशीर्वादः।

तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ भगवान की जन्मभूमि

चन्द्रपुरी तीर्थ की आरती

तर्ज –झुमका गिरा रे.....

आरति करो रे,
श्री चन्द्रपुरी शुभ तीर्थक्षेत्र की आरति करो रे।
आरति करो-3 रे, श्री चन्द्रपुरी.....।।टेक.।।
अष्टम तीर्थंकर चन्द्रप्रभु, चन्द्रपुरी में जन्मे थे।
गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान चार, कल्याणक प्रभु के यहीं हुए।।
आरती करो, आरती करो, आरती करो रे,
लक्ष्मणा मात के प्रिय नन्दन की आरति करो रे।।श्री....।।1।।
गर्भ चैत्र वदि पंचमि तिथि में, पौष कृष्ण ग्यारस जन्मे।
इस ही तिथि वैराग्य हुआ, निज राज्य विभव तज विरत हुए।।
आरती करो, आरती करो, आरती करो रे,
दीक्षाभूमि श्री चन्द्रपुरी की आरति करो रे।।श्री....।।2।।
फाल्गुन कृष्णा सप्तमि तिथि में, केवलज्ञान हुआ प्रभु को।
फाल्गुन शुक्ला सप्तमि को, सम्मेदशिखर से मुक्त प्रभो।।
आरती करो, आरती करो, आरती करो रे,
चन्दा सम शीतल चन्द्रप्रभू की आरति करो रे।।श्री....।।3।।
गंगा नदि के तट पर स्थित, यह तीरथ मंगलकारी।
दृश्य विहंगम प्यारा लगता, प्रभु की प्रतिमा मनहारी।।
आरती करो, आरती करो, आरती करो रे,
शान्तीदायक पावन तीरथ की, आरति करो रे।।श्री....।।4।।
इस तीरथ की आरति करके, भाव यही मन में आता।
मेरी आत्मा तीर्थ बने, मुक्तीपथ से जोड़ूं नाता।
आरती करो, आरती करो, आरती करो रे,
'चन्दनामती' निजसिद्धी हेतू, आरति करो रे।।5।।

तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ भगवान की आरती

तर्ज –आरति करूँ चौबीस जिनेश्वर.....

आरति करूँ श्री चन्द्रप्रभु की, आरति करूँ प्रभु जी।।टेक.।।

पहली आरति गर्भकल्याणक-2,
पन्द्रह मास रतनवृष्टी की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।1।।

दूजी आरति जन्मोत्सव की-2,
मेरु सुदर्शन पर अभिषव की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।2।।

तीजी है निष्क्रमण दिवस की-2,
लौकांतिक सुर अनुमोदन की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।3।।

चौथी आरति केवलि प्रभु की-2,
द्वादशगण युत समवसरण की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।4।।

पंचम आरति पंचम गति की-2,
मोक्ष धाम संयुत जिनवर की, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।5।।

पंचकल्याणकपति प्रभु तुम हो-2,
नाश किया संसार भ्रमण को, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।6।।

आरति से भव आरत छुटता-2,
करें ''चन्दना'' वन्दन प्रभु का, आरति करूँ प्रभु जी।।आरति.।।7।।

तीर्थंकर श्रेयांसनाथ जन्मभूमि

सिंहपुरी तीर्थ का परिचय

प्रस्तुति – आर्यिका चन्दनामती

सिंहपुरी वाराणसी जिले में वाराणसी से सड़कमार्ग द्वारा 6 किमी. दूर उत्तर में अवस्थित है। भगवान श्रेयांसनाथ तीर्थंकर के जन्म एवं चार कल्याणकों के कारण यह प्रागैतिहासिक काल से जैन तीर्थ रहा है। यहाँ उनके गर्भ, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये चार कल्याणक हुए थे। विद्वानों का मत है कि तीर्थंकर श्रेयाँसनाथ जी का जन्म स्थान होने के कारण ही इस स्थान का नाम ''सारनाथ' पड़ गया है।

सारनाथ में भगवान श्रेयाँसनाथ का एक प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर है। मंदिर के गर्भगृह में तीर्थंकर श्रेयांसनाथ जी की ढाई फिट ऊँची श्याम वर्ण की मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान है उसी वेदी में आगे एक छोटी श्वेतवर्ण की श्रेयांसनाथ की प्रतिमा है। भगवान की वेदी अत्यन्त कलापूर्ण है। मुख्यवेदी के बगल में नन्दीश्वर जिनालय का फलक है जिसमें 60 प्रतिमाएँ बनी हुई हैं ये भूगर्भ से प्राप्त हुई थीं।

मंदिर के कम्पाउन्ड से बाहर भारत सरकार की ओर से पुष्पोद्यान बना है। यह सारी भूमि पहले दिगम्बर जैन मंदिर की थी किन्तु समाज की लापरवाही एवं असावधानी के कारण इस विशाल भूमि पर अब सरकारी अधिकार हो गया है।

जैन मंदिर के निकट ही 103 फिट ऊँचा एक स्तूप है, इसे सम्राट अशोक द्वारा निर्मापित कहा जाता है। भगवान श्रेयाँसनाथ की जन्मनगरी होने के कारण सम्राट् ने भगवान की स्मृति में इसे निर्मित कराया होगा यह मान्यता भी प्रचलित है। स्तूप के ठीक सामने सिंहद्वार बना हुआ है जिसके दोनों स्तम्भों पर सिंहचतुष्क बना हुआ है। सिंहों के नीचे धर्मचक्र है जिसके दाईं ओर बैल और घोड़े की मूर्तियाँ अंकित हैं द्वार का आकार भी बड़ा कलापूर्ण है। लोक में यह मान्यता है कि इसी स्तंभ की सिंहत्रयी को भारत सरकार ने राजचिन्ह के रूप में मान्यता प्रदान की है।

पौराणिक मान्यतानुसार इस स्थान पर ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ ने धर्मचक्र प्रवर्तन किया था। यहाँ पर देवों ने उनके समवसरण की रचना की थी।

सारनाथ वर्तमान में महात्मा बुद्ध की प्रथम उपदेशस्थली के रूप में जग विख्यात है एवं यहाँ बुद्ध के अनेकों मंदिर आदि हैं। यहाँ पुरातत्त्व की खुदाई में अनेकों बुद्ध संबंधी अवशेष एवं जैन मूतियाँ इत्यादि प्राप्त हुईं जो यहाँ के संग्रहालय में सुरक्षित हैं।

सारनाथ अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल है अतः जैनधर्म के प्रचार-प्रसार हेतु भी यह अत्यन्त उपयोगी स्थल हो सकता है। काशी के जैन समाज की भावनाओं के आधार पर सारनाथ के प्रांगण में सवा ग्यारह फुट ऊँची पद्मासन चमत्कारिक प्रतिमा भगवान श्रेयांसनाथ की स्थापित हो चुकी हैं। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने नवंबर 2002 में सारनाथ पदार्पण के अवसर पर इस परिसर का नाम ''भगवान श्रेयांसनाथधर्मस्थल'' प्रदान किया है।

तीर्थंकर श्रेयांसनाथ जी का मंदिर अत्यन्त रमणीक स्थान पर स्थित है मंदिर के चारों तरफ एवं बाहर की हरियाली का दृश्य नयनाभिराम है। वैसे यहाँ ठहरने के लिए जैन धर्मशाला बनी हुई है फिर भी अधिकतर सिंहपुरी की वंदना करने आने वाले यात्री बनारस में ही रुकते हैं। बनारस से टैम्पो, बस आदि समय-समय पर आसानी से उपलब्ध रहते हैं। सिंहपुरी की यात्रा के साथ ही ''चन्द्रपुरी'' तीर्थ की यात्रा भी लोग करते हैं अतः एक दिन में दोनों तीर्थों की वंदना हो जाती है।

सिंहपुरी तीर्थ पूजा

–अडिल्ल छन्द –

सिंहपुरी श्रेयाँसनाथ जन्मस्थली।
है प्रसिद्ध जो सारनाथ पुण्यस्थली।।
उसकी पूजन हेतु करूँ स्थापना।
तीरथ अर्चन से होगा हित आपना।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्र!अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठः ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक (सखी छन्द) –

प्रासुक जल से भर झारी, कर धार मिटे भ्रम भारी।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय जन्म-जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चन्दन लाया, चर्चत भवताप नशाया।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय संसार-तापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गजमोती सम अक्षत हैं, अर्चत लूँ अक्षय पद मैं।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों को चुन-चुन लाऊँ, भर अंजलि नाथ चढ़ाऊँ।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान अनेक बनाये, पूजन हेतू ले आये।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिदीप कपूर जलाऊँ, आरति कर पुण्य बढ़ाऊँ।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु धूप बनाई, अग्नी में उसे जलाई।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदिक फल लाऊँ, शिवफल हित उन्हें चढ़ाऊँ।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों को मिलाया, ''चन्दना'' प्रभू को चढ़ाया।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल से करूँ शान्तीधारा, हो शांत जगत यह सारा।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।10।।

शान्तये शांतिधारा।

उपवन से पुष्प मंगाऊँ, पुष्पांजलि कर सुख पाऊँ।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वंदन।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

–अथ प्रत्येक अर्घ्य (शंभु छन्द) –

जिस सिंहपुरी में विष्णुमित्र, राजा ने राज्य किया सुंदर।
देवों की टोली आती थी, जिनकी रानी नंदा के घर।।
शुभ ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी को, श्री श्रेयांस गर्भ में आये थे।
मैं उस नगरी को नमूँ जहाँ, धनपति ने रतन बरसाये थे।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथगर्भकल्याणकपवित्र सिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि फाल्गुन वदि ग्यारस को जहाँ, श्रेयाँसनाथ का जन्म हुआ।
सुरपति ने मेरु सुदर्शन पर, कर न्हवन जन्म निज धन्य किया।।
फिर सिंहपुरी में लाकर के, जन्मोत्सव पुनः मना डाला।
उस भू को अर्घ्य चढ़ा मैंने , निज जीवन सफल बना डाला।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मकल्याणकपवित्र सिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपभोग राज्यवैभव का कर, वैराग्य जहाँ मन में आया।
जहाँ पर बसंतऋतु नाश देख, प्रभु ने दीक्षा पथ अपनाया।।
उस सिंहपुरी में फाल्गुन वदि, ग्यारस को तपकल्याण हुआ।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमन करूँ, तो मेरा भी कल्याण हुआ।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथदीक्षाकल्याणकपवित्र सिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ माघ वदी नवमी को जहाँ, जिनवर को केवलज्ञान हुआ।
श्रेयाँसनाथ तीर्थंकर ने, तुंबुरु तरु नीचे ध्यान किया।।

उस सिंहपुरी को सारनाथ के, नाम से जाना जाता है।
जो अर्घ्य चढ़ाकर जजे इसे, श्रुतज्ञान उसे मिल जाता है।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्र सिंहपुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (शंभु छन्द)–

श्रेयाँसनाथ के गर्भ जन्म तप, ज्ञान चार कल्याण जहाँ।
वह सिंहपुरी है धन्य तथा, सम्मेदशिखर निर्वाण हुआ।।
चारों कल्याणक से पवित्र, श्रीसिंहपुरी को वंदन है।
पूर्णार्घ्य समर्पित कर चाहूँ, तीरथपूजन का शुभ फल मैं।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुःकल्याणकपवित्र सिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं सिंहपुरी जन्मभूमि पवित्रीकृत श्रीश्रेयाँसनाथजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

तर्ज-आओ बच्चों.....

अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, तीर्थ यजन को आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल बनाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन ।। टेक. ।।
बड़े पुण्य से तीर्थंकर प्रभु, जन्म धरा पर लेते हैं।
अपनी पावनता से वे जग, को पावन कर देते हैं।।
उनकी पदरज पाने हेतू, तीर्थ यजन को आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल बनाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।1।।

ढाई द्वीपों में इक सौ, सत्तर जो कर्मभूमियाँ हैं।
वे तीर्थंकर के जन्मों से, बनती धर्मभूमियाँ हैं।।
इसीलिए वे जन्मक्षेत्र, साक्षात तीर्थ कहलाये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।2।।
जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र का, आर्यखण्ड जो पहला है।
उसमें जन्मे चौबिस तीर्थंकर का परिचय करना है।।
उनकी जन्मभूमियों को हम, वन्दन करने आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।3।।
ग्यारहवें तीर्थंकर श्रीश्रेयाँसनाथ को नमन करूँ।
चारकल्याणक से पावन, उनके जन्मस्थल को प्रणमूँ।।
अतिशयकारी प्रतिमा के, दर्शन भक्तों ने पाये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।4।।
जहाँ प्रभू ने राजा बनकर, राजनीति सिखलाई थी।
धर्मनीति के साथ जहाँ पर, न्यायनीति बतलाई थी।
होते ही वैराग्य जहाँ, लौकान्तिक सुरगण आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।5।।
ध्यानलीन हो जहाँ प्रभू ने, कर्म घातिया नष्ट किया।
दिव्यध्वनि सुन जहाँ प्राणियों, ने मिथ्याम ध्वस्त किया।।
उस श्रेयाँसनाथ धर्मस्थल, का यश गाने आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।6।।

हे स्वामी! इस कलियुग में, सम्यक्त्व जहाँ अतिदुर्लभ है।
वहीं आपकी भक्ती से, भक्तों को मिलता सब कुछ है।।
इसीलिए ''चन्दनामती'', हम अर्घ्य सजाकर लाये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।7।।

–दोहा –

सिंहपुरी की अर्चना, करे चमत्कृत लाभ।
जिन प्रतिमा की वन्दना, हरे सभी दुख व्याधि।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छन्द –

जो भव्यप्राणी जन्मभूमी सिंहपुरि वंदन करें।
श्रेयांसप्रभु की चरण रज से, शीश निज पावन करें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चन्दना'' वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

श्री श्रेयांसनाथ जिनपूजा

रचयित्री-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

–अथ स्थापना-अडिल्लछंद –

श्री श्रेयांस जिन मुक्ति रमा के नाथ हैं।
त्रिभुवन पति से वंद्य त्रिजग के नाथ हैं।।
गणधर गुरु भी नमें नमाकर शीश को।
आह्वानन कर जजूँ नमाऊँ शीश को।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-भुजंगप्रयात छंद –

भरा नीर भृंगार में क्षीर जैसा, करूँ पाद में धार पीयूष जैसा।
मिले पूर्ण शांती महा ज्ञानधारा,सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिसा गंध चंदन प्रभू पाद चर्चूं, सभी देह संताप मेटो जिनेंद्रा।
मिले पूर्ण शांती महा ज्ञानधारा,सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धुले शालि के पुंज से नाथ पूजूँ मिले पूर्ण आनंद जो नष्ट ना हो।
मिले पूर्ण शांती महा ज्ञानधारा,सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही मोगरा नीलवर्णी कमल हैं चढ़ाते तुम्हें नाथ! होऊँ विमल मैं।
मिले पूर्ण शांती महा ज्ञानधारा,सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पूरियां और गुझिया समोसे चढ़ाऊँ प्रभू को क्षुधा व्याधि नाशे।
मिले पूर्ण शांती महा ज्ञानधारा,सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।5।।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखा दीप की जगमगे ध्वांत नाशे, करूँ आरती भारती को प्रकाशे।
मिले पूर्ण शांती महा ज्ञानधारा,सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।6।।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाऊँ अगनिपात्र में धूप अब मैं, जले कर्म की धूप फैले दिशा में।
मिले पूर्ण शांती महा ज्ञानधारा,सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।7।।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंनास नींबू व अखरोट काजू चढ़ाऊँ प्रभो! मोक्षफल हेतु फल ये।
मिले पूर्ण शांती महा ज्ञानधारा,सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।8।।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मिले नीर गंधादि चाँदी कुसुम भी, चढ़ाऊँ तुम्हें अर्घ पूरो अभीप्सित।
मिले पूर्ण शांती महा ज्ञानधारा,सभी दुःख नाशें मिले सौख्य सारा।।9।।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

श्रीजिनवर पदपद्म, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले शांति सुखसद्म, चउसंघ में भी शांति हो।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
परमामृत सुखलाभ, मिले निजातम संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ पंचकल्याणक अर्घ्य

–चौपाई छंद–

सिंहपुरी पितु विष्णूमित्र। नंदा माँ के गर्भ पवित्र।।
ज्येष्ठ कृष्ण छठ तिथि अभिराम। मैं पूजूँ इत गर्भ कल्याण।।1।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाषष्ठ्यां श्रीश्रेयांसनाथगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि फाल्गुन वदि ग्यारस जन्म। सुरपति किया मेरु पे न्हवन।।
सुरगण उत्सव करें अपार। जजत प्रभू को हर्ष अपार।।2।।
ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णाएकादश्यां श्रीश्रेयांसनाथजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋतु वसंत श्री विनशी जबे। बारह भावन भायी तबे।
फाल्गुन वदि ग्यारस पूर्वाण्ह। जजूँ प्रभू का तप कल्याण।।3।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां श्रीश्रेयांसनाथदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ वदी मावस अपराण्ह, तुंबुर तरु नीचे धर ध्यान।
पाँच सहस धनु अधर जिनेश, जजूँ ज्ञान कल्याण हमेश।।4।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णाअमावस्यायां श्रीश्रेयांसनाथकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि पूनो श्रेयांस, कर्म नाश करके शिवकांत।
गिरि सम्मेद पूज्य जग सिद्ध, नमूँ मोक्ष कल्याण प्रसिद्ध।।5।।
ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लापूर्णिमायां श्रीश्रेयांसनाथमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय नमः।

जयमाला

–सोरठा–

नित्य निरंजन नाथ, परम हंस परमात्मा।
तुम गुणमणि की माल, धरूँ कंठ में मैं सदा।।1।।

–नरेंद्र छंद–

चिन्मय ज्योति चिदंबर चेतन, चिच्चैतन्य सुधाकर।
जय जय चिन्मूरति चिंतामणि, चिंतितप्रद रत्नाकर।।
आप अलौकिक कल्पवृक्ष प्रभु, मुंह मांगा फल देते।
आप भक्त चक्री सुरपति, तीर्थंकर पद पा लेते।।2।।

जो तुम चरण सरोरुह पूजें, जग में पूजा पावें।
जो जन तुमको चित में ध्याते, सब जन उनको ध्यावें।।
जो तुम वचन सुधारस पीते, सब उनके वच पालें।
जो तुम आज्ञा पालें भविजन, उन आज्ञा नहिं टालें।।3।।

जो तुम सन्मुख भक्ति भाव से, नृत्य करें हर्षित हों।
तांडव नृत्य करें उन आगे, सुरपति भी प्रमुदित हों।।
जो तुम गुण को नित्य उचरते, भवि उनके गुण गाते।
जो तुम सुयश सदा विस्तारें, वे जग में यश पाते।।4।।

मन से भक्ति करें जो भविजन, वे मन निर्मल करते।
वचनों से स्तुति को पढ़कर, वचन सिद्धि को वरते।।
काया से अंजलि प्रणमन कर, तन का रोग नशाते।
त्रिकरण शुचि से वंदन करके, कर्म कलंक नशाते।।5।।

कुंथु आदि गण ईश सतत्तर, सात ऋद्धि के धारी।
मुनि निर्ग्रंथ सहस चौरासी, सातभेद गुणधारी।।

प्रमुख धारणा आदि आर्यिका, बीस सहस इक लक्षा।
दोय लाख श्रावक व श्राविका, चार लाख गुणदक्षा।।6।।

आयु चुरासी लाख वर्ष की, अस्सी धनुष तनू है।
तप्त स्वर्ण छवि तनु अतिसुंदर, गेंडा चिन्ह सहित हैं।।
प्रभु श्रेयांस विश्व श्रेयस्कर, त्रिभुवन मंगलकारी।
प्रभु तुम नाम मंत्र ही जग में, सकल अमंगलहारी।।7।।

बहु विध तुम यश आगम वर्णे, श्रवण किया मैं जब से।
तुम चरणों में प्रीति लगी है, शरण लिया मैं तब से।।
प्रभु श्रेयांस! कृपा ऐसी अब, मुझे पर तुरतहिं कीजे।
सम्यग्ज्ञानमती लक्ष्मी को, देकर निजसम कीजे।।8।।

–दोहा–

परमश्रेष्ठ श्रेयांस जिन, पंचकल्याणक ईश।
नमूँ नमूँ तुमको सदा, श्रद्धा से नत शीश।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।।

–सोरठा–

जो पूजें धर प्रीति, श्री श्रेयांस जिनेश को।
लहें स्वात्म नवनीत, क्रम से जिन गुणसंपदा।।1।।

इत्याशीर्वादः।

तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ भगवान की जन्मभूमि

सिंहपुरी तीर्थ की आरती

तर्ज –जहाँ डाल-डाल पर.....

श्री सिंहपुरी पावन तीरथ की आरति को हम आए।
कंचन का थाल सजाए।।टेक.।।
है पुण्य बड़ा जो तीर्थंकर प्रभु, जन्म धरा पर लेते।
अपनी पावनता से वे जगभर, को पावन कर देते।।हाँ.....
उनकी पदरज पाने हेतू, हम तीर्थ नमन को आए, कंचन का थाल सजाए।।1।।

श्रेयांसनाथ ग्यारहवें प्रभुवर, इसी धरा पर जन्मे।
पितु विष्णुमित्र माता नंदा के, संग इन्द्रगण हरषे।।हाँ.....
हुए चार-चार कल्याण जहाँ, उस तीर्थभूमि को ध्याएं, कंचन.....।।2।।

प्राचीन यहाँ इक मंदिर है, श्रेयांसनाथ जिनवर का।
मनहारी प्रतिमा श्यामवर्ण, अतिशय है उन प्रभुवर का।।हाँ.....
है निकट बनारस तीर्थक्षेत्र, उसकी आरति को आए, कंचन.....।।3।।

जिनमंदिर निकट बना स्तूप, जिनवर की याद दिलाता।
सम्राट् अशोक से निर्मापित, उसकी है सुन्दर गाथा।।उसकी.....
उस पुण्यधाम के दर्शन को, शुभ भाव सजाकर लाए, कंचन.....।।4।।

इस नगरी को अब सारनाथ के, नाम से जाना जाता।
श्रेयांसनाथ धर्मस्थल इसको, कहें ज्ञानमति माता।।हाँ.....
''चन्दनामती'' भी ज्ञानप्राप्ति हित, चरण कमल प्रभु ध्याए।
कंचन का थाल सजाए।।5।।

श्री श्रेयांसनाथ भगवान की आरती

-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

तर्ज –माई रे माई.....

श्री श्रेयांसनाथ जिनवर की, आरति सब मिल गाएँ।
विष्णुमित्र-नन्दा के सुत की, आरति पाप नशाए।।
बोलो जय जय जय-4।।
सिंहपुरी नगरी अति पावन, जहाँ जन्म प्रभु लीना।
ज्येष्ठ कृष्ण छठ तिथि में माँ ने, गर्भ में धारण कीना।।
फाल्गुन बदि ग्यारस को जन्मे.....2, सुरपति पूज रचाएँ।
विष्णुमित्र-नन्दा के सुत की, आरति पाप नशाए।।
बोलो जय जय जय-4।।1।।
जन्म उत्सव के बाद प्रभू का, न्हवन हुआ मेरू पर।
सुरपति ने इक सहस्र आठ, कलशे ढोरे थे प्रभु पर।।
जन्म न्हवन के बाद इन्द्रगण.....2, उत्सव खूब मनाए।
विष्णुमित्र-नन्दा के सुत की, आरति पाप नशाए।।
बोलो जय जय जय-4।।2।।
वर्ष अनेकों बाद पुनः फाल्गुन वदि ग्यारस तिथि में।
दीक्षा ले ली प्रभुवर ने और छोड़ दिया सब वैभव।।
बारह भावन भाई फिर तो.....2, लौकांतिक सुर आए।
विष्णुमित्र-नन्दा के सुत की, आरति पाप नशाए।।
बोलो जय जय जय-4।।3।।
केवलज्ञानी होकर प्रभु जी, मोक्षधाम में पहुँचे।
गिरि सम्मेदशिखर है शिवथल, हम सब मिलकर पूजें।।
श्रावण सुदि पूनो को हम.....2, लाडू निर्वाण चढ़ाएँ।
विष्णुमित्र-नन्दा के सुत की, आरति पाप नशाए।।
बोलो जय जय जय-4।।4।।
श्री श्रेयांसनाथ की आरति, निःश्रेयस पद देवे।
सुख, सम्पति, सौभाग्य तथा मनवांछित फल भी देवे।।
तभी ''सारिका'' भक्ती से हम.....2, प्रभु आरति को आए।
विष्णुमित्र-नन्दा के सुत की, आरति पाप नशाए।।
बोलो जय जय जय-4।।5।।